Chapter- 5

‘ऋ‘ की मात्रा

STUDY NOTES

- ‘ऋ‘ स्वर वर्ण का सातवां स्वर है।
- ‘ऋ‘ की मात्रा व्यंजनो के निचे अर्धवृताकार यानी अंग्रेजी के (c) अक्षर के समान होती है जिसे व्यंजनों के साथ जोड़कर लिखाजाता है

  ऋ की मात्रा - (c)
- ‘ऋ‘ मात्रा के उच्चारण स्थान ‘मूधी‘ है (जब जीभ, होंठ और तालु के बिच के भाग को छुती है)
- विशेष बात - ऋ, की मात्रा का प्रयोग अक्षर ‘र‘ पर नहीं किया जाता।

  जैसे ‘रृतु‘ को हम, ऋतु लिखते है।
- ध्यान रखें - ‘क‘ से लेकर ‘ह‘ तक सभी वर्णो पर (अक्षर र को छोडकर) मात्रा का नियमित अभ्यास कराएँ। मात्रा के सही उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।

शब्द

क - कृ - कृषक

व - वृ - वृक्ष

म - मृ - मृग

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow

- अन्य शब्द - पितृ, कृपा, गृह, मातृ, पृथ्वी, अमृत, कृपाण, घृत, सृजन, नृप

  उच्चारण करते समय शब्दों के सही अर्थ का भी ध्यान रखें।

  जैसे -

मृग	-	हिरन
वृक्ष	-	पेड़
मातृ	-	माता
पितृ	-	पिता
नृप	-	राजा
गृह	-	घर
घृत	-	घी

अभ्यास कार्य

१. वाक्यों में ऋ (ृ) की मात्रा को रेखांकित करो।

क) मुझ पर <u>कृपा</u> करो। (उदाहरण)

ख) ऋषि पहाड़ पर बैठे हैं।

ग) दूध अमृत है।

घ) भारत कृषि प्रधान देश है।

ङ) घृणा मत करो।

च) हमारी मातृभाषा हिंदी है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

२. ऋ (ृ) की मात्रा लगाकर शब्द पूरे करो।

नत्य, गह, दढ़, कत, मग, मात, पित, सजन, पथ्वी, घत, वक्ष, कपाण

उत्तर- नृत्य, गृह, दृढ़, कृत, मृग, मातृ, पितृ, सृजन, पृथ्वी, घृत, वृक्ष, कृपाण

३. एक जैसे शब्दों को जोड़कर लिखो।

मातृ	कृषि
नृप	कृत
घृत	कृप
ऋषि	पितृ

उत्तर -

मातृ - पितृ

नृप - कृप

घृत - कृत

ऋषि - कृषि

अतिरिक्त प्रश्न

१. शब्दों के अर्थ लिखें।

क) पृथ्वी - धरती

ख) नृत्य - नाच

ग) सृजन - रचना

घ) मातृ - माता